

Dharm Pariksha Part 03

Folder No.	022212
Granth Name	Dharm Pariksha Part 03
Author	Chandrashekharvijay
Publisher	Kamal Prakashan Trust
Edition	1
Year	2015
Pages	186

धर्मपरिक्षा भाग ०३

श्लोकर नं	०२२२१२
ग्रन्थ	धर्मपरिक्षा भाग ०३
लेखक	चंद्रशेखरविजय
प्रकाशक	कमल प्रकाशन ट्रस्ट
आवृत्ति	१
प्रकाशन वर्ष	२०१५
पृष्ठ	१८६

मुख्य टाईटल

प्रस्तावना -----	५
अनुक्रमणिका -----	२४
अभिनिवेशिकमपि अनेकविधम् -----	३
मिथ्यादृशां संशयानध्यवसायौ विपर्यासशक्तयुक्तत्वादसत्प्रवृत्ति-अनुबन्धिनौ इति पूर्वपक्ष -----	१३
मोहापकर्षप्रयुक्ता रागद्वेषमन्दता पुण्यानुबन्धिपुण्यहेतु -----	२२
चारिसञ्जीवनीचारन्याय -----	३२
अनाभिग्रहिकं गुणकारि इति सिद्धि -----	४२
मिथ्यादृशां स्वदेवाराधनं साधूनां अनुमोद्यम् -----	५३
बलादृष्टिवर्णनम् -----	६३
मित्रादिदृष्टिमतां भावेन जैनत्वमिति उत्तरपक्ष -----	७३
सम्यग्दृशां सर्वज्ञासन्नत्वं मिथ्यादृशां चानासन्नत्वं किन्तु सर्वज्ञसेवकत्वं तु सर्वेषामेव -----	८७
शिष्यानुसारेण देशनाकरणाद् देशनाभेद इति प्रथमं समाधानम् -----	९९
अत्रार्थे योगबिन्दुपाठ -----	१०९
व्यवहारतो जैनमार्गस्थानामेवापुनर्बन्धकत्वसम्भव -----	११९
सम्यग्दृष्टिवर्णनम् -----	१३०
नियतक्रियाया मार्गानुसारिभावजनने नैकान्तिकत्वमात्यन्तिकत्वं वा -----	१४०
सद्ब्रह्मप्रवृत्तिजनितया नैश्वयिकया परसमयबाह्यतया पतञ्जल्यादीनामपि मार्गानुसारित्वमिति समाधानम् -----	१५४